विस्तृत प्रतिवेदन

शिक्षक दिवस समारोह

05 सितम्बर 2024

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी

आईयूसीटीई कैंपस, सुंदर बगिया, नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005

Inter University Centre for Teacher Education
(An Autonomous Institution of UGC, MoE, Govt. of India)

© IUCTE, September 2024

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored or distributed in any form or by any means, electronics or mechanical, magnetic tape, including photocopying, recording or otherwise, without written permission from the publisher.

Published by Senior Administrative Officer,
Inter University Centre for Teacher Education (IUCTE)
Banaras Hindu University, Sundar Bagiya, Nariya-B.L.W. Road, Varanasi-221005
Design & Layout by Shubham Prajapati (Technical Assistant, IUCTE) & Printed at Jembo Photo State & Internet, Varanasi.

निदेशक की कलम से

शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषक नहीं होता वरन् वह समाज का निर्माता, संस्कारों का पोषक, परिमार्जक, प्रसारक तथा चरित्र-निर्माण का प्रमुख स्तंभ होता है। भारतवर्ष की प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा में गुरु को ईश्वर के समकक्ष माना गया है। *"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु:"* का उद्घोष हमारे सांस्कृतिक मानस में प्रतिष्ठित है।

05 सितम्बर का यह दिवस शिक्षा जगत के लिए श्रद्धा, स्मृति एवं संकल्प का प्रतीक है। यह दिन न केवल डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् जैसे महान शिक्षाविद् की जन्मतिथि का स्मरण कराता है, वरन् यह हमें शिक्षक की महत्ता, भूमिका एवं उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक भी करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को सूचनात्मक प्रक्रिया न मानते हुए, उसे मूल्य-आधारित, समग्र, बहुविषयी एवं भारतीयता से युक्त एक जीवन-पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया है। इस परिवर्तनशील परिप्रेक्ष्य में शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। हमें ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो न केवल विषय में पारंगत हों, अपितु संवेदनशील, नवाचारशील एवं विद्यार्थी के भीतर छिपे ज्ञान को जागृत करने वाले हों। अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (आई.यू.सी.टी.ई.) इस दिशा में प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रहा है। हम शिक्षक-प्रशिक्षण की गुणवत्ता, भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनरुत्थान एवं नवाचारयुक्त अध्यापन हेतु अनेक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। शिक्षक दिवस का यह अवसर हमें अपने उद्देश्य की पुनः पुष्टि करने का अवसर प्रदान करता है।

इस पावन दिवस पर मैं सभी शिक्षकों को कोटिशः नमन करता हूँ, जो अपने तप, साधना एवं समर्पण से शिक्षा की लौ को प्रज्ज्वलित किए हुए हैं।

आइए, हम सभी मिलकर शिक्षा को एक ऐसी साधना बनाएँ जो न केवल विद्या दे अपितु जीवन को दिशा भी दे।

शुभकामनाओं सहित !

प्रो. प्रेम नारायण सिंह
निदेशक

शुभकामना संदेश

शिक्षक दिवस केवल एक तिथि नहीं अपितु शिक्षकीय चेतना, प्रेरणा और समर्पण का पर्व है। यह दिन हमारे उन गुरुओं को स्मरण और नमन करने का अवसर है, जिन्होंने अपने जीवन को शिक्षार्थ समर्पित करते हुए असंख्य जीवनों को सन्मार्ग दिखाया।

प्राचीन भारतीय परंपरा में शिक्षा मात्र आजीविका का साधन न होकर, वरन् एक साधना रही है। *"सा विद्या या विमुक्तये"* की भावना से प्रेरित इस भावभूमि में शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक, संरक्षक और प्रेरक की रही है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह भूमिका और भी व्यापक हो गई है, विशेषकर तब जब हम 21वीं सदी की वैश्विक चुनौतियों, तकनीकी परिवर्तन एवं शैक्षिक विविधताओं के बीच खड़े हैं।

आज के शिक्षक को केवल विषय का ज्ञाता नहीं, अपितु शोध की दृष्टि से युक्त, नवाचार के प्रति सजग, और विद्यार्थी की वैयक्तिक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनना होगा। जब तक शिक्षक स्वयं जिज्ञासु, अनुसन्धानशील एवं प्रगतिशील नहीं होंगे, तब तक वे नव पीढ़ी को सृजनशीलता एवं विश्लेषणात्मक सोच से युक्त नहीं कर सकते।

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी में हमारा सतत् प्रयास रहा है कि शिक्षक-प्रशिक्षण केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहकर भारतीय ज्ञान परंपरा, शोध चेतना और मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत हो, साथ ही शैक्षणिक गुणवत्ता एवं शोध-संवर्धन की दिशा में हम निरंतर प्रयत्नशील रहें।

इस पावन अवसर पर मैं शिक्षक समुदाय को यह स्मरण कराना चाहूँगा कि प्रत्येक अध्यापक एक दीपक के समान है, जो स्वयं जलकर दूसरों के जीवन में प्रकाश फैलाता है। आज आवश्यकता है कि हम शिक्षक स्वयं को केवल 'पाठ्यवस्तु प्रदाता' न मानकर शिक्षार्थियों के 'जीवन-निर्माता' के रूप में विकसित करें।

शिक्षक दिवस पर आप सभी को कोटिशः हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध

अनुक्रमणिका

क्रम.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	कार्यक्रम के बारे में	1
2.	अतिथि परिचय	2
3.	कार्यक्रम का विस्तृत विवरण	3-7
4.	आयोजन समिति	8
5.	समाचार पत्रों में	9
6.	कार्यक्रम की झलकियाँ	10

कार्यक्रम के बारे में

भारतवर्ष में प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस अत्यंत श्रद्धा, कृतज्ञता एवं उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह दिन केवल एक तिथि नहीं बल्कि ज्ञान, संस्कार और प्रेरणा के प्रतीक के रूप में हमारे जीवन में विशेष स्थान रखता है। यह दिवस भारत के द्वितीय राष्ट्रपति महान दार्शनिक एवं शिक्षाविद् डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में शिक्षकों को समर्पित होता है। उनके विचार, शिक्षण पद्धति और जीवन मूल्यों ने शिक्षा जगत को नई दिशा प्रदान की।

यह दिन विद्यार्थियों को अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान प्रकट करने का अवसर प्रदान करता है एवं हमें स्मरण कराता है कि शिक्षक समाज के निर्माता होते हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को दिशा देने का कार्य करते हैं। उनका मार्गदर्शन जीवनभर प्रेरणा का स्रोत बना रहता है।

इसी पुण्य अवसर पर अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (आई.यू.सी.टी.ई.), वाराणसी द्वारा दिनांक 5 सितम्बर 2024 को एक भावपूर्ण एवं गरिमामय कार्यक्रम शिक्षक दिवस समारोह के रूप में आयोजित किया गया। 'एजुकेशन दैट इण्डिया नीड्स' (Education That India Needs) विषयक यह आयोजन शिक्षकों के योगदान को सम्मानित करने, उनके प्रति आभार व्यक्त करने तथा शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने हेतु समर्पित था।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात् भारतीय शिक्षाविद् प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत, पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) की महनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. वांगचुक दोर्जे नेगी, कुलपति, केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान (सी.आई.एच.टी.एस.), सारनाथ, वाराणसी ने की।

कार्यक्रम के पूर्व प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत, अध्यक्ष, शासी मण्डल, आई.यू.सी.टी.ई., वाराणसी के कर-कमलों द्वारा अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र में नवनिर्मित सत्यजीत रे दृश्यश्रव्यांकन कक्ष (ऑडियो-वीडियो स्टूडियो) का उद्घाटन भी हुआ।

कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों से आए शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की। यह आयोजन न केवल शिक्षकों के प्रति सम्मान का प्रतीक था, बल्कि शिक्षा के उज्ज्वल भविष्य की ओर एक प्रेरणादायक कदम भी सिद्ध हुआ।

इस आयोजन में देश के विशिष्ट शिक्षाविदों एवं प्रबुद्ध अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिसने कार्यक्रम को अत्यंत सारगर्भित एवं प्रेरणादायी बना दिया।

अतिथि परिचय

प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत

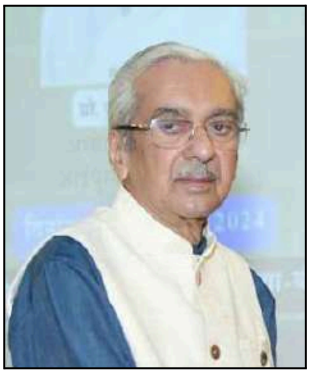

प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत एक प्रख्यात भारतीय शिक्षाविद् हैं, जिन्होंने विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। आपका जन्म 8 जुलाई 1943 को हरदोई, उत्तर प्रदेश में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी-एस.सी., एम-एस.सी. तथा पी-एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। आप राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) के निदेशक तथा राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई.) के अध्यक्ष रहे, जहाँ आपने कई शैक्षिक नवाचारों एवं नीतिगत परिवर्तनों का मार्ग प्रशस्त किया। आप यूनेस्को (यू.एन.ई.एस.सी.ओ.) की कार्यकारी परिषद के सदस्य भी रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में आपके अद्वितीय योगदान हेतु भारत सरकार द्वारा पद्मश्री (2015) तथा यूनेस्को द्वारा "जॉन अमोस कोमेनीयस पदक" से सम्मानित किया गया। वर्तमान में आप अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (आई.यू.सी.टी.ई.), वाराणसी के शासी मण्डल के अध्यक्ष हैं। आप भारत सरकार की विभिन्न शैक्षिक एवं सांस्कृतिक समितियों के सदस्य हैं। आप एक प्रखर विचारक, लेखक एवं शिक्षानीति के प्रेरक पुरुष हैं।

प्रो. वांगचुक दोर्जे नेगी

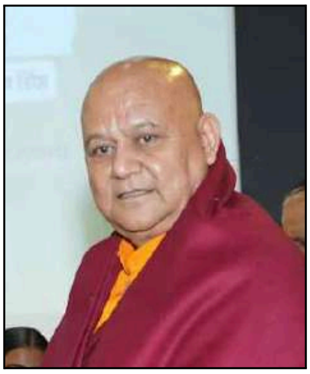

प्रो. वांगचुक दोर्जे नेगी वर्तमान में केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान (सी.आई.एच.टी.एस.), सारनाथ, वाराणसी के कुलपति हैं। आपने बौद्ध दर्शन में आचार्य (स्वर्ण पदक) की उपाधि केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी तथा डॉक्टरेट (पी-एच.डी.) की उपाधि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्राप्त की है। आपने 32 वर्षों से अधिक समय तक विश्वविद्यालय स्तर पर बौद्ध दर्शन का अध्यापन किया है और कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध केंद्रों में धर्मोपदेश दिए हैं। आपकी विशेषज्ञता अभिधर्म, माध्यमक दर्शन, वज्रयान परंपरा, मन-शरीर संबंध और ध्यान विधियों में है। आपने केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह के निदेशक (2010–2015) के रूप में भी कार्य किया है और ऑस्ट्रेलिया तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के विश्वविद्यालयों में अतिथि प्रोफेसर के रूप में अध्यापन किया है। आप भारत सरकार की विभिन्न शैक्षिक एवं सांस्कृतिक समितियों के सदस्य रहे हैं, जिनमें आई.सी.सी.आर. पुरस्कार समिति, राष्ट्रीय संस्कृत परिषद और भारतीय हिमालयी नालंदा बौद्ध परंपरा परिषद शामिल हैं।

कार्यक्रम का विस्तृत विवरण

प्रो. प्रेम नारायण सिंह

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने सर्वप्रथम सभी उपस्थित गणमान्यजनों का कार्यक्रम में हार्दिक स्वागत किया और सभी को शिक्षक दिवस की शुभकामनायें दी। इस वक्तव्य में प्रो. सिंह ने शिक्षा की भूमिका और शिक्षक के कर्तव्यों पर गहन विचार व्यक्त किया। अपने वक्तव्य में एक प्रसिद्ध कहावत का उल्लेख किया जिसमें उन्होंने कहा कि यदि आप एक वर्ष की योजना बना रहे हैं तो अनाज उगाइए, यदि दस वर्षों की योजना बना रहे हैं तो पेड़ लगाइए, और यदि सौ वर्षों की योजना बना रहे हैं तो मनुष्य का निर्माण कीजिए। इस संदर्भ में उन्होंने शिक्षा को मानव निर्माण की महत्वपूर्ण प्रक्रिया बताया, क्योंकि एक सार्थक और जागरूक नागरिक का निर्माण शिक्षा के बिना संभव नहीं है।

शिक्षा केवल जानकारी का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान, मूल्य और संस्कारों के हस्तांतरण की प्रक्रिया है। प्रो.सिंह ने इस बात पर जोर देते हुये कहा कि हम सभी जो किसी न किसी रूप में शिक्षा से जुड़े हैं, समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक का कार्य केवल पाठ्यक्रम पढ़ाना नहीं, बल्कि एक संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करना होता है। इसलिए शिक्षक दिवस जैसे अवसरों पर हमें अपने कर्तव्यों को याद करना चाहिए और आत्मचिंतन करना चाहिए कि हम अगली पीढ़ी को क्या दे रहे हैं।

अपने वक्तव्य में उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि शिक्षा एक ऋण के समान है, जिसे हम पिछली पीढ़ी से प्राप्त करते हैं और अगली पीढ़ी को चुकाते हैं। यह विचार दर्शाता है कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का विषय भी है। हर समय में चुनौतियाँ रही हैं और भविष्य में भी रहेंगी लेकिन हमें अपनी भूमिका को पहचानते हुए समस्याओं के समाधान के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

अंत में, प्रो. सिंह ने सभी उपस्थित लोगों का अभिनंदन और आभार व्यक्त करते हुए यह संदेश दिया कि शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने वाले सभी लोग समाज में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनका प्रयास न केवल वर्तमान पीढ़ी, बल्कि आने वाली कई पीढ़ियों को प्रभावित करता है।

प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत

'एजुकेशन दैट इण्डिया नीड्स' (Education That India Needs) विषय पर अपने वक्तव्य में प्रो. राजपूत ने शिक्षा, शिक्षक, ज्ञान और राष्ट्र निर्माण की महत्ता पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने बनारस और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रति अपने गहरे जुड़ाव को व्यक्त करते हुए अपने शैक्षिक जीवन की शुरुआत को याद किया। सबसे पहले उन्होंने पंडित मदन मोहन मालवीय को श्रद्धांजलि दी, जिन्होंने अनगिनत युवाओं को शिक्षित और प्रेरित किया। वक्ता ने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट के विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि हम भविष्य को नहीं जानते, लेकिन हम युवाओं को भविष्य का सामना करने के लिए तैयार कर सकते हैं। इस विचार को आगे बढ़ाते हुए, उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय और प्राइमरी स्कूलों की कक्षाओं में ही भविष्य का निर्माण होता है।

इसके बाद उन्होंने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के योगदान की चर्चा की और शिक्षा में उनकी विचारधारा को सराहा। एक प्रेरणादायक घटना का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि जब डॉ. राधाकृष्णन सोवियत संघ में

राजदूत बने तो उन्होंने स्टालिन के कंधे पर हाथ रखकर सहजता से संवाद किया। यह घटना दर्शाती है कि विद्वता आत्मविश्वास और अपनत्व को जन्म देती है जिससे व्यक्ति बिना भय के सत्य बोल सकता है और अपने विचार रख सकता है। इसी अपनत्व का भाव भारतीय शिक्षा व्यवस्था की नींव में थी, लेकिन समय के साथ इसमें कमी आई है, जिसे पुनः जाग्रत करने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रभाव को अपने जीवन के अनुभवों से जोड़ते हुए प्रो. राजपूत ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की एक घटना साझा की, जहां उनके प्रोफेसर ने मात्र एक टिप्पणी से उन्हें नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी। यह दिखाता है कि शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पढ़ाने तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे अपने व्यवहार और मूल्यों से छात्रों के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इसके बाद, उन्होंने भारतीय शिक्षा नीतियों में हुए परिवर्तनों का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि वे शिक्षा नीति निर्माण और क्रियान्वयन में सीधे तौर पर जुड़े रहे हैं, और इसके दौरान उन्होंने कई चुनौतियों का सामना किया। जापान के उदाहरण को प्रस्तुत करते हुए, उन्होंने बताया कि कैसे द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जापान ने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्रणाली को मजबूत कर राष्ट्र निर्माण किया। जापान ने अपने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को सम्मान दिया और उन्हें देश के भविष्य निर्माता के रूप में स्थापित किया। इस दृष्टिकोण ने जापान को दुनिया का अनुशासित और विकसित राष्ट्र बना दिया।

उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा की चर्चा करते हुये कहा की और बताया कि भारत सदियों से विश्व गुरु रहा है। भारतीय संस्कृति में अधिकार से अधिक कर्तव्य को महत्व दिया गया था, जिससे समाज में त्याग, तपस्या और समर्पण की भावना विकसित हुई। आज भी यदि हम अपनी शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता, नैतिकता और अनुशासन को प्राथमिकता दें तो हम एक विकसित और सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। वक्ता ने भारत की संस्कृति, परंपराओं, और शिक्षा व्यवस्था के ऐतिहासिक महत्व और वर्तमान चुनौतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत की समृद्ध सभ्यता को बार-बार आक्रमणों का सामना करना पड़ा, जिसमें न केवल मंदिरों बल्कि भाषा और ज्ञान परंपराओं पर भी प्रहार किया गया।

उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि पश्चिमी इतिहासकार भारत के योगदान को अक्सर अनदेखा करते हैं, जबकि भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियों का प्रमाण प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। आधुनिक विज्ञान ने जिन तथ्यों को हाल ही में खोजा, वे भारतीय परंपराओं में हजारों वर्षों से मौजूद थे। शिक्षा प्रणाली की कमजोरियों और उसमें सुधार की आवश्यकता पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञान और कौशल दोनों आवश्यक हैं। केवल परीक्षा प्रणाली पर आधारित शिक्षा से सृजनात्मकता और जिज्ञासा खत्म हो जाती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने वैश्विक स्तर पर कई उपलब्धियां हासिल की हैं, लेकिन नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने के लिए हमें भारतीय ज्ञान परंपराओं को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करना होगा। उन्होंने इस बात पर भी चिंता जताई कि भारतीय युवा, विशेष रूप से पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हो रहे हैं और पारिवारिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं होना चाहिए, बल्कि यह मानवीय मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत को सशक्त बनाने का माध्यम भी होना चाहिए।

अंत में, उन्होंने सुझाव दिया कि स्वामी विवेकानंद, अरविंद, टैगोर, और गांधी के शैक्षिक दर्शन को अपनाकर हम एक संतुलित और प्रभावी शिक्षा प्रणाली विकसित कर सकते हैं, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच सामंजस्य स्थापित कर सके। शिक्षा में ज्ञान, प्रतिबद्धता और प्रदर्शन (Competence, Commitment, Performance) को आवश्यक बताते हुए यह जोर दिया कि शिक्षक का दायित्व केवल पढ़ाना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को प्रेरित करना भी है। अपने उद्बोधन में प्रो. राजपूत ने जस्टिस जे.एस. वर्मा के 2012 की रिपोर्ट का उल्लेख करते हुए शिक्षक शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता पर चिंता जताई गई, जहां डिग्रियां बेची जा रही हैं। इसके अलावा, सुप्रीम कोर्ट द्वारा सभी धर्मों की समानता को शिक्षा में शामिल करने की स्वीकृति को भी उजागर किया। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में चिंतन, अध्ययन, मनन और सदुपयोग की प्रवृत्ति विकसित करना होना चाहिए, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सके।

प्रो. वांगचुक दोर्जे नेगी

प्रो. नेगी का यह अध्यक्षीय भाषण शिक्षा और शिक्षक की भूमिका पर केंद्रित था, जिसमें उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बी.एच.यू.) के संस्थापक महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को नमन करते हुए सभी शिक्षकों के प्रति सम्मान व्यक्त किया। शिक्षक दिवस के अवसर पर उन्होंने अतीत और वर्तमान के सभी गुरुजनों को स्मरण करते हुये देश के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उनके अनुसार शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का साधन भी है।

प्रो. नेगी ने 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को अपनाने पर विशेष जोर देते हुये कहा कि जिस प्रकार एक परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी होते हैं, वैसे ही समाज के प्रत्येक व्यक्ति को परस्पर सहयोग और सहानुभूति रखनी चाहिए। उदाहरण स्वरूप जब हम चाय पीते हैं, तो हमें यह सोचना चाहिए कि वह चाय पत्ती असम या दार्जिलिंग के मजदूरों द्वारा कठिन परिश्रम से उत्पन्न की गई है। इसी तरह दूध, चीनी, मकान, सड़क आदि सभी वस्तुएं कई लोगों के प्रयासों का परिणाम हैं। यदि हम इस "ऋण भावना" को अपने भीतर विकसित करेंगे, तो हमारे अंदर दूसरों के प्रति सम्मान और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होगी। शिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि एक शिक्षक का अपने छात्रों के प्रति वही प्रेम और चिंता होनी चाहिए जो वह अपने स्वयं के बच्चों के प्रति रखते हैं। केवल अपने बच्चों के भविष्य की चिंता करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि कक्षा में पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र के उज्ज्वल भविष्य की चिंता करना भी शिक्षक का नैतिक कर्तव्य है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों को सिर्फ पाठ्यक्रम तक सीमित रखते हैं और उन्हें जीवन मूल्यों की शिक्षा नहीं देते, तो शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य अधूरा रह जाता है।

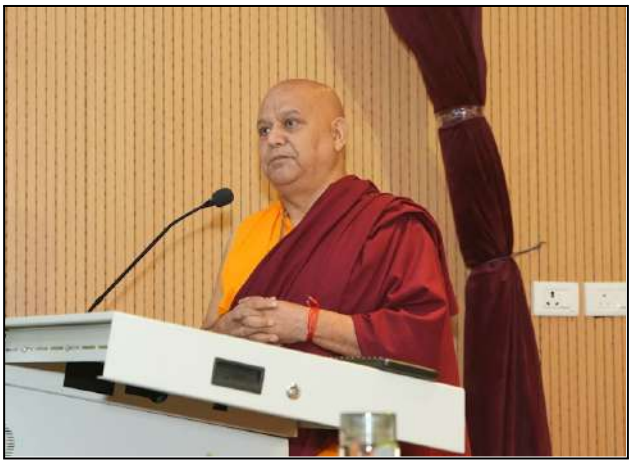

शिक्षा के उद्देश्य पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा का मुख्य लक्ष्य विद्यार्थियों में युक्ति और प्रमाण पर आधारित निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना होना चाहिए। साथ ही, छात्रों को आलोचनात्मक सोच और संवेदनशीलता की ओर प्रेरित किया जाना चाहिए, ताकि वे समाज के हित में सोच सकें। उनका मानना है कि एक अच्छा शिक्षक समाज का मार्गदर्शक होता है, जो विद्यार्थियों को सही दिशा में प्रेरित करता है। जब एक शिक्षक एक छात्र को अच्छी शिक्षा देता है, तो न केवल एक परिवार बल्कि पूरा समाज समृद्ध होता है।

अंत में, उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि शिक्षक का कार्य समाज में सबसे महत्वपूर्ण है, लेकिन आज के समय में इसे कम आंका जाता है। लोग शिक्षक को अंतिम विकल्प के रूप में देखते हैं, जबकि वास्तव में यह सबसे

सम्माननीय वृत्ति है। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे अपने कार्य को पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ करें, ताकि वे आने वाली पीढ़ियों को एक मजबूत नींव दे सकें क्योंकि ज्ञानदान सबसे बड़ा दान है। यदि शिक्षक अपनी जिम्मेदारी को सही ढंग से निभाएं, तो राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होगा।

कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. राजा पाठक द्वारा सम्पन्न मंगलाचरण से तथा अतिथियों द्वारा दीपप्रज्वलन एवं माता सरस्वती व महामना की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुआ।

अतिथियों का परिचय डॉ. ज्ञानेन्द्र सिंह तथा स्वागत-वक्तव्य अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने किया। कार्यक्रम में अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन प्रो. आशीष श्रीवास्तव, संकाय प्रमुख, शोध एवं शैक्षणिक ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। केन्द्र के कर्मचारियों, अधिकारियों व अध्यापकों सहित कार्यक्रम में 150 से अधिक विद्वत्जनों की गरिमामयी उपस्थिति थी।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

प्रो. प्रेम नारायण सिंह,

निदेशक, अ.वि.अ.शि.के., वाराणसी

संरक्षक

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध, अ.वि.अ.शि.के., वाराणसी

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी

सहायक प्रोफेसर, अ.वि.अ.शि.के., वाराणसी

सह-समन्वयक

डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह

सहायक प्रोफेसर, अ.वि.अ.शि.के., वाराणसी

तकनीकी टीम

श्री कुलदीप पाण्डेय, प्रणाली विश्लेषक

श्री राणा प्रताप राव, हार्डवेयर इंजीनियर

श्री विकास जानू, वेब मास्टर

श्री आनंद जायसवाल, सर्वर ऑपरेटर

श्री अभिज्ञान कुमार श्रीवास्तव, तकनीशियन (सॉफ्टवेयर प्रबंधन)

श्री शुभम प्रजापति, तकनीकी सहायक (मल्टीमीडिया)

प्रशासनिक टीम

डॉ. नन्द लाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

डॉ. अनिल कुमार सिंह, एस.ओ. (प्रशासन)

श्री आनंद कुमार यादव, एलडीसी

लेखा अनुभाग

श्री एम.आर. रामसुब्रमण्यम, प्रशासनिक अधिकारी (वित्त)

डॉ. विजय कुमार राय, सहायक

सुश्री पूजा सिंह, एलडीसी

सुश्री नेहा पटेल, एलडीसी

समाचार पत्रों में

शिक्षा में दीर्घकालीन चिंतन की जरूरी-प्रोफेसर जगमोहन

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, (बी.एच.यू.) में गुरुवार को शिक्षक दिवस समारोह 'भारत की शैक्षिक आवश्यकताएं' विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का भी आयोजन किया गया था। मुख्य अतिथि प्रख्यात शिक्षाविद्, पद्मश्री प्रोफेसर जगमोहन सिंह राजपूत ने कहा कि हमारे देश के भविष्य को उज्वल बनाने के लिए शिक्षा में दीर्घकालीन चिंतन की जरूरत है जिससे हमारे देश की नीव मजबूत होगीए विकास सुनिश्चित होगा, साथ ही गुणवत्ता भी आयेगी। यदि हमें देश का निर्माण करना है तो हमारी ऐतिहासिक विरासत के समय पालन, समर्पण एवं कार्य पद्धति में त्याग एवं बलिदान देने वाले शिक्षकों की जरूरत है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रोफेसर वांग्चुंग दोर्जे नेगी, (वी.सी. केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान) ने कहा कि हमें 'वसुधैव कुटम्बकम्' का अनुसरण करना चाहिए तभी हम बच्चों में शिक्षा के द्वारा युक्ति व प्रमाण से युक्त निर्णय लेने की क्षमता का विकास कर सकते है। इस अवसर पर आई.यू.सी.टी.ई. निदेशक प्रोफेसर प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि शिक्षा वह कर्ज है जो हमें पिछ्ली पीढ़ी से प्राप्त हुआ है। हमें अगली पीढ़ी को चुकाना है। कार्यक्रम के पूर्व पद्मश्री प्रोफेसर राजपूत ने अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द में नवनिर्मित दृश्य-श्रव्यांकन कक्ष (आडियो-वीडियो स्टूडियो) का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में सर्वश्री प्रोफेसर सत्यजीत प्रधान, प्रोफेसर ए.एन. राय, प्रोफेसर कल्पलता पाण्डेय, प्रोफेसर दीना नाथ सिंह, प्रोफेसर सुनील कुमार सिंह, प्रोफेसर जितेन्द्र कुमार, प्रोफेसर प्रेम शंकर राम, प्रोफेसर उदयभान सिंह, प्रोफेसर बच्चा सिंह, प्रोफेसर अरविन्द पाण्डेय सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। संयोजन डॉक्टर सुनील कुमार त्रिपाठी, डॉक्टर ज्ञानेन्द्र सिंह, मंगलाचरण डॉक्टर राजा पाठक, एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर आशीष श्रीवास्तव ने किया।

"आज" दिनांक 06 सितंबर, 2024 पृ.05

आईयूसीटीई में शिक्षक दिवस पर 'भारत की शैक्षिक आवश्यकताएं' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि प्रख्यात शिक्षाविद्, पद्मश्री प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षण संस्थान के कुलपति प्रो. वांग्चुक दोर्जे नेगी ने की। आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेमनारायण सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। इस दौरान केंद्र के आडियो-वीडियो स्टूडियो का उद्घाटन किया गया।

हिन्दुस्तान दिनांक 06 सितंबर, 2024 पृ.08

- https://youtu.be/Tx4eeC3oC-U?si=DShl83SXsKOFcd2V
- https://nazarnewsnetwork.com/?p=11745
- https://youtube.com/@NazarNewsNetworkIAJ1996?si=NXys0ZGybBF7sR3z
- https://newstrack.com/uttar-pradesh/varanasi/teacher-day-celebrated-at-inter-university-teacher-education-centre-bhuvaranasi-with-wangchung-dorje-465502

कार्यक्रम की झलकियाँ

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
आईयूसीटीई परिसर, सुंदर बगिया
नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005
उत्तर प्रदेश

संपर्क नंबर.: 0542-2368823
ईमेल: directoroffice@iucte.ac.in